जयशंकर प्रसाद

-छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक।

महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

विद्या ऽमृतमश्नुते

अम्ब जि. ऊना (हि.प्र.)

जन्मः 30 जनवरी 1889 (बनारस)

निधनः 15 नवंबर 1937 (बनारस)

जन्म स्थानः

वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

कुछ प्रमुख कृतियाः

कामायनी, आँसू, कानन-कुसुम, प्रेम पथिक, झरना, लहर

❖महाकवि के रूप में स विख्यात जयशंकर प्रसाद (१८८९-१९३७) हिंदी नाट्य जगत और कथा साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। तितली, कंकाल और इरावती जैसे उपन्यास और आकाशदीप, मधुआ और पुरस्कार जैसी कहानियाँ उनके गद्य लेखन की अपूर्व ऊँ चाइया ँ हैं।

❖विविधः

हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में स े एक हैं। प्रसाद जी न े हिंदी काव्य में छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई और वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई।

❖१४ जनवरी १९३७ को वाराणसी में निधन।

काव्य

कामायनी

कामायनी महाकाव्य कवि प्रसाद की अक्षय कीर्ति का स्तम्भ है। भाषा, शैली और विषय- तीनों ही की दृष्टि से यह विश्व-साहित्य का अद्वितीय ग्रन्थ है। 'कामायनी' में प्रसादजी ने प्रतीकात्मक पात्रों के द्वारा मानव के मनोवैज्ञानिक विकास को प्रस्तुत किया है तथा मानव जीवन में श्रद्धा और बुद्धि के समन्वित जीवन-दर्शन को प्रतिष्ठा प्रदान की है।

आँसू

आँसू कवि के मर्मस्पर्शी वियोगपरक उदगारों का प्रस्तुतीकरण है।

->अन्य कविताओं में

- *विनय, प्रकृति, प्रेम तथा सामाजिक भावनाएँ हैं।*
- *वर्णनात्मक, भावात्मक, आलंकारिक, सूक्तिपरक, प्रतीकात्मक*

नाटक:

स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त
ध्रुवस्वामिनी, जन्मेजय
का नाग यज्ञ, राज्यश्री,
एक घूँट, विशाख,
अजातशत्रु आदि

कहानी संग्रह:

छाया, प्रतिध्वनि,
आकाशदीप,
आंधी, इन्द्रजाल

उपन्यास:

कंकाल, तितली, इरावती

❖प्रसाद जी एक सीधे-साधे व्यक्तित्व के इंसान थे। उनके जीवन में दिखावा न था। वे अपने जीवन के सुखदुख को लोगो पर व्यक्त न करना चाहते थे, अपनी दुर्बलताओं को अपने तक ही सीमित रखना चाहते थे। उनको कई रचनाओं मे उनके द्वारा उनकी वेदना पूर्ण जीवन को दर्शाया गयया है।
और कईयों मे तोएक तरफ उनकी यथार्थवादी प्रवृतिभी दिखती है, तो दूसरी तरफ उनकी विनम्रता भी झलकती है।

❖ उनकी कितनी ही कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें आदि से अंत तक भारतीय संस्कृति एवं आदर्शों की रक्षा का सफल प्रयास किया गया है। और 'आँसू' ने उनके हृदय की उस पीड़ा को शब्द दिए जो उनके जीवन में अचानक मेहमान बनकर आई और हिन्दी भाषा को समृद्ध कर गई।

जयशंकर जी के जीवन से मैंने यह सीख ली है की जीवन
चाहे कितनी ही मुश्किले क्यों न आइमे सदैव उसके लि
तैयार रहना चाहिए और उसके आने पर पीछे न हटकर
उसका डटकप सामना करना चाहिए।
तथा यह भी की हमे अपने
रूचियो को कभी सिमित नही
रखना चाहीए, बल्कि उसका
परिष्कार करना चाहिए।

जिवन का हर पल, हर हादसा,
हमे कुछ न कुछ सीख देता है
तो हमे उसका सदैव सकारात्मक
हिस्सा चुन, आगे बढते रहना
चाहिए।

धन्यवाद!